हसरत की बूँदें

ज़िंदगी बोझ बनी थी उसकी,
ज़िंदगी अनचाहा जैसी लगी थी उसको,
आगे न जीना चाहता था वह,
वह मृगतृष्णा में जीना न चाहता था वह।

जो अपने वह अपना बनाया था,
अभ्र टूट गया था उसकी सामने,
जो हसरत वह नज़दीक पकड़े थे,
ज़िंदगी ने अभ्र तोड़ दिया था उसको सामने।

आँसू लुढ़कते रहे चेहरे से उसकी...
राहत देने कोई न था आसपास उसको।
ज़िंदगी में अकेलेपन महसूस करने वक्त भी,
चैन से रोने के लिए भी कोई पास न था उसको...

घायल पड़ी थी वह यह रक्तपात में,
यह रक्तपात जो बनी जिंदगी हमारे।
आगे बढ़ने को कोई भी रास्ता न था...
रास्ते जो हताश ही मिटाया था।

खामोश होती रहते-रहते...
डूब गयी वह गहरी तनहाई में।
सिसकते- सिसकते रहते-फिरते,
डूब गयी वह खिन्न की लहरों में।

एक दिन सपना नींद से टूटा...
खुशी के दरवाजा फिर से खुला।
मुड़कर देखा तो मौत खड़ा था...
समय और जान के बीच में पड़ा था।

लुप्त होते जिजीविषा में रहते वक्त...
देखा वह ओस की बूँदें सफेद।
वह बरस रहे थे फलक से नीचे...
जो मानव को छोड़ा उत्कृष्ट जैसे।

ओस की बूँदें जो थी बड़ी दिव्य,
खबसा किया उसकी मन और हृदय।
फलक की खामोशी दूर करके यह बूँदें...
छोड़ा उसे हर्षित और काँपने....

बरसते रहे यह ओस की बूँदें,
बहिष्कृत किये बेचैन को बूँदे।
बरसते रहे यह ओस की बूँदें,
मिलाया थी विषाद की ज़हर जैसी बूँदें।

अंधेरे को दूर करने यह जानता,
मानव को राहत देने यह जानता।
सबको हैरान बनाती थी यह बूँदें,
सबको आश्चर्य बनाती थी यह बूँदें।

कितनी गहरी अंधकार में भी बरसते थे,
कितनी तनाव भी घटनी में भी बरसते थे।
कितनी 'मायूस' को 'आशा' से बदलते थी,
कितनी को हर्षित बनाया थी यह बूँदें....

यह ओस की बूँदें जो थे सफेद....
बनाया उसकी मन में हसरत।
मौत की साथी अब न बनना चाहा वह...
लुप्त होते जीना न चाहा था वह...

ज़िंदगी की खेल में भागना न चाहता था वह,
ज़िंदगी की खेल में हारना न चाहता था वह।
आँखें जो थे पहले खिन्न से फीका,
अब बनी थी गुरूर से लालिमा....

ओस की तरह आश्चर्य फैलना था उसे,
ओस की तरह चमकना था उसे...
क्योंकि... इन बूँदें बनाया उसे दिलकश
इन बूँदें बनाया उसे वफादार।

निराशा को दूर करके,
हताशा को दूर करके,
आगे बढ़ने चाहता था वह,
आगे बढ़ने वाला था वह।